



बैतुल-मरदू। "आध्यात्मिक जागृति द्वारा आदिवासी समाज का सर्वाधिकरण" विषय पर आयोजित आदिवासी महासम्मेलन के दीप प्रज्वलित कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, राज्याल मंगुभाई पटेल, केन्द्रीय जनजाति राज्य मंत्री दुर्गादास उदके, राजमन्त्री नरेश शिवाजी पटेल, ब्रह्माकुमारीज बैतुल क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. मंजु, ब्रह्माकुमारीज भोपाल उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी एवं ब्रह्माकुमारीज के ग्यार्वाक्ष प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी ब्र.कु. नममल।



मुजफ्फरपुर-आमरगंजा रोड (बिहार)। मातृ दिवस के अवसर पर नवनिर्वाचित बिहार सरकार के कला एवं संस्कृति मंत्री प्रमोद कुमार चंद्रधर एवं बिहार सरकार के पर्यटन मंत्री विजय प्रसाद गुप्ता के संयोजकत्व आगमन पर ज्ञान चर्चा करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी। साथ हैं अन्य अतिथिगण एवं ब्रह्माकुमारीज बहन।



प्रतापगढ़-हिमाचल प्रदेश। विधायक भूधरदत्त गौड़ एवं हिमाचल प्रदेश महिला आयोग अध्यक्ष विद्या मेहता के संयोजकत्व आगमन पर आर्ट गैलरी का अन्वेषण एवं ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. संध्या बहन। साथ हैं ब्र.कु. श्याम सुन्दर तथा अन्य।



कोटा-कुन्ताही (राज.)। कलाबाड़ी स्थित परमेश्वर के योग गुरु 'सहस्र परमाश्रम' देव जी को ईश्वरीय स्मृति चित्र भेंट करते हुए ब्र.कु. सरस्वती।



पटियाला-पंजाब। अध्याप्य श्री नकुलकृष्ण शास्त्री जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. यशवी। साथ हैं ब्र.कु. दिव्या एवं ब्र.कु. संजय।



कुल्लू-हि.प्र.। मदर्स डे के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए दिवांग फाउण्डेशन डायरेक्टर डॉ. श्रुति मोर्या भारद्वाज, महिला मोर्चा अध्यक्ष श्रीमती चिंदिया सूर, महिला मण्डल प्रधान सरला ठाकुर, ब्र.कु. किरण एवं ब्र.कु. नीरव।

जन्माष्टमी का आध्यात्मिक अर्थ

जन्माष्टमी का आध्यात्मिक अर्थ

भारतवर्ष में जन्माष्टमी का पर्व अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ मनाया जाता है। सामान्य रूप से इसे भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में देखा जाता है, किंतु ब्रह्माकुमारीज की आध्यात्मिक दृष्टि से जन्माष्टमी का अर्थ और भी गहन है। यह केवल एक ऐतिहासिक या धार्मिक घटना का स्मरण नहीं, बल्कि स्वर्णिम सतयुग के प्रथम राजकुमार श्रीकृष्ण के दिव्य अवतरण की याद दिलाने वाला पावन पर्व है।

श्रीकृष्ण का दिव्य स्वरूप

इस सृष्टि के प्रथम राजकुमार और पूर्ण 16 कलाओं से सम्पन्न दिव्य आत्मा हैं। उनका जन्म उस नवीन स्वर्णिम संसार में होता है, जिसको स्थापना स्वयं निराकार परमात्मा शिव परमात्मा संगमयुग पर राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान के माध्यम से करते हैं। अर्थात् शिव परमात्मा रचयिता हैं और श्रीकृष्ण उस नई दुनिया के प्रथम राजकुमार हैं।

श्रीकृष्ण के जीवन की विशेषताएं

श्रीकृष्ण का जीवन पवित्रता, प्रेम, मधुरता, सौंदर्य और सम्पूर्ण गुणों का प्रतीक है। उनके मुख पर दिव्य मुस्कान, व्यवहार में सरलता, संबंधों में स्नेह और व्यक्तित्व में आकर्षण दिखाई देता है। यही कारण है कि उनका बाल स्वरूप सभी के हृदय को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करता है। उनका जीवन हमें यह संदेश देता है कि वास्तविक सुख बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि आत्मा की पवित्रता और श्रेष्ठ संस्कारों से प्राप्त होता है।

संगमयुग और नई सृष्टि की तैयारी

आज का समय संगमयुग है - पुरानी दुनिया से नई दुनिया की ओर परिवर्तन का काल। इस समय शिव बाबा मानव आत्माओं को उनकी

मूल पहचान का ज्ञान देकर उन्हें पुनः पवित्र और गुणवान बना रहे हैं। जब आत्माएं राजयोग के अभ्यास द्वारा अपने विकारों पर विजय प्राप्त करती हैं, तब वे स्वर्णिम युग के योग्य बनती हैं। ऐसे ही पुरुषार्थ का फल है श्रीकृष्ण जैसा दिव्य जीवन।

जन्माष्टमी का वास्तविक संदेश

जन्माष्टमी हमें केवल उपवास, झांकियों और उत्सव तक सीमित नहीं रखती, बल्कि आत्मचिंतन का अवसर भी देती है। हमें स्वयं से प्रश्न करना चाहिए कि क्या हम अपने जीवन में श्रीकृष्ण जैसे गुण विकसित कर रहे हैं? क्या हमारे विचार पवित्र हैं? क्या हमारे संबंध प्रेमपूर्ण हैं? क्या हमारे कर्म मर्यादित हैं? यदि हम इन प्रश्नों पर मनन करें और राजयोग के माध्यम से अपने संस्कारों को श्रेष्ठ बनाएं, तभी जन्माष्टमी का वास्तविक संदेश हमारे जीवन में उतर सकेगा।

आज की आवश्यकता

आज संसार अशांति, तनाव, हिंसा और नैतिक पतन जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण के दिव्य चरित्र और शिव बाबा द्वारा दिए जा रहे आध्यात्मिक ज्ञान की प्रामाणिकता और भी बढ़ जाती है। जब प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर के लोभ, क्रोध, अहंकार और आसक्ति को समाप्त कर प्रेम, शांति, पवित्रता और सहयोग के संस्कार अपनाएगा, तभी स्वर्णिम युग जैसी सुखमय दुनिया का निर्माण संभव होगा।

आइए, इस जन्माष्टमी पर केवल श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव ही न मनाएं, बल्कि उनके समान गुणवान, मर्यादित और श्रेष्ठ जीवन जीने का संकल्प भी लें। शिव बाबा की याद और राजयोग के नियमित अभ्यास द्वारा स्वयं को ऐसा श्रेष्ठ पात्र बनाएं कि आने वाले स्वर्णिम युग में हम भी दिव्य जीवन के अधिकारी बन सकें। यही जन्माष्टमी का वास्तविक आध्यात्मिक संदेश है और यही मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि भी है।



हरिनगर-दिल्ली। सुरक्षा सेवा प्रभाग के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 10 दिवसीय 'मेटल वेलनेस ऑपरेशन' का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर करते हुए डॉ. किरण बेदी, सेवानिवृत्त आईपीएस, संयुक्त पुलिस आयुक्त 'वर्तित नरवाना, जयपीएस, भारतीय नौसेना के पूर्व उप-प्रमुख चहस एडमिरल, सेवानिवृत्त एस.एन. घोरपड़े, सेना मुख्यालय की प्रधान एक्जीक्यूटिविटी सलाहकार डॉ. वंदना अहड़वाण, ईसीएचएस निदेशक कर्नल राजीव सिंह, हरिनगर उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी, ब्र.कु. प्रो. ई.वी. स्वर्णिमधन तथा सेवानिवृत्त कर्नल जोसे सती।



आब रोड-राज. स्थानीय संगम भवन में काल व्यक्तित्व विकास के लिए आयोजित ईश्वरीय सांस्कृतिक संस्था कार्यक्रम में मेवास्थी राजयोगिनी ब्र.कु. रुक्मिणी दीदी, ब्र.कु. दयाल, ज्ञान सरोवर से ब्र.कु. देवू, ब्र.कु. नितिन तथा अन्य।



वैशाली नगर-जयपुर। ब्रह्माकुमारीज सेवोकेन्द्र राजयोग भवन में परम पूज्य महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 प्रदीप गिरि जी महाराज के आगमन पर परमात्म संदेश देने के समक्ष विश्व में 'सनातन शांति एवं आध्यात्मिक जागरूकता' विषय पर ज्ञान-विमर्श के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. सुपमा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रकला दीदी तथा अन्य अतिथिगण।



कलिंगपोंग-प.बंगाल। ब्रह्माकुमारीज समाज सेवा प्रभाग एवं स्थानीय राजयोग सेवोकेन्द्र द्वारा जयदशकोत्सव अवसर पर आयोजित 'आध्यात्मिक जागृति द्वारा विश्व नवीकरण' कार्यक्रम के दौरान पद्मश्री प्रोफेसर डॉ. गम्भीर सिंह चोपड़न को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अलका बहन। साथ हैं ब्र.कु. मोनाम बहन, ब्र.कु. ई.वी. गिरिश, ब्र.कु. धीरेन्द्र, अधिकारिता प्रभाकर देशन तथा अन्य।